वर्ष 39 अंक 56
Pages 14
Lucknow, Thursday, 14 December 2017
LUCKNOW EDITION
Lucknow/Sitapur Distt.- ₹ 2/-
Other Distt.- ₹ 3/-

दैनिक जागरण

www.inextlive.com Published from LUCKNOW • Agra • Allahabad • Bareilly • Dehradun • Gorakhpur • Jamshedpur • Kanpur • Meerut • Patna • Ranchi • Varanasi

कड़वी यादें मिटाना चाहते हैं मेसी } 13

प्रियंका के बाहर होने का फायदा दीपिका को } 12

facebook.com/inextlive youtube.com/inextlive inext twitter.com/inextlive log on to epaper.inextlive

ऊर्जा संरक्षण के लिए जरूरी समग्र प्रयास

अमृतेश श्रीवास्तव

(Writer is associated with NPCIL, Department of Atomic Energy)

आज के इस बदलते परिदृश्य में जिस प्रकार से हम सब अपनी महत्वाकांक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से दोहन कर रहे हैं, नि:संदेह यह एक गहन चिंता का विषय है. जिस प्रकार हम रोजमर्रा से जुड़े तमाम कार्यकलापों हेतु ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों पर पूरी तरह से आश्रित हो चुके हैं, वो दिन दूर नहीं जब हमें इसके दुष्परिणामों से भी रूबरू होना पड़ेगा. आज हमें इस बात पर एकमत होने की जरूरत है कि हमारे पास मौजूद ऊर्जा सीमित है, इसलिए हमें अपनी आवश्यकताएं भी सीमित करनी पड़ेंगी.

हर बार की तरह इस वर्ष भी भारत में ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आज राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जा रहा है. इस अभियान का एकमात्र मकसद लोगों को ऊर्जा और इसके संरक्षण के बारे में ज्यादा से ज्यादा

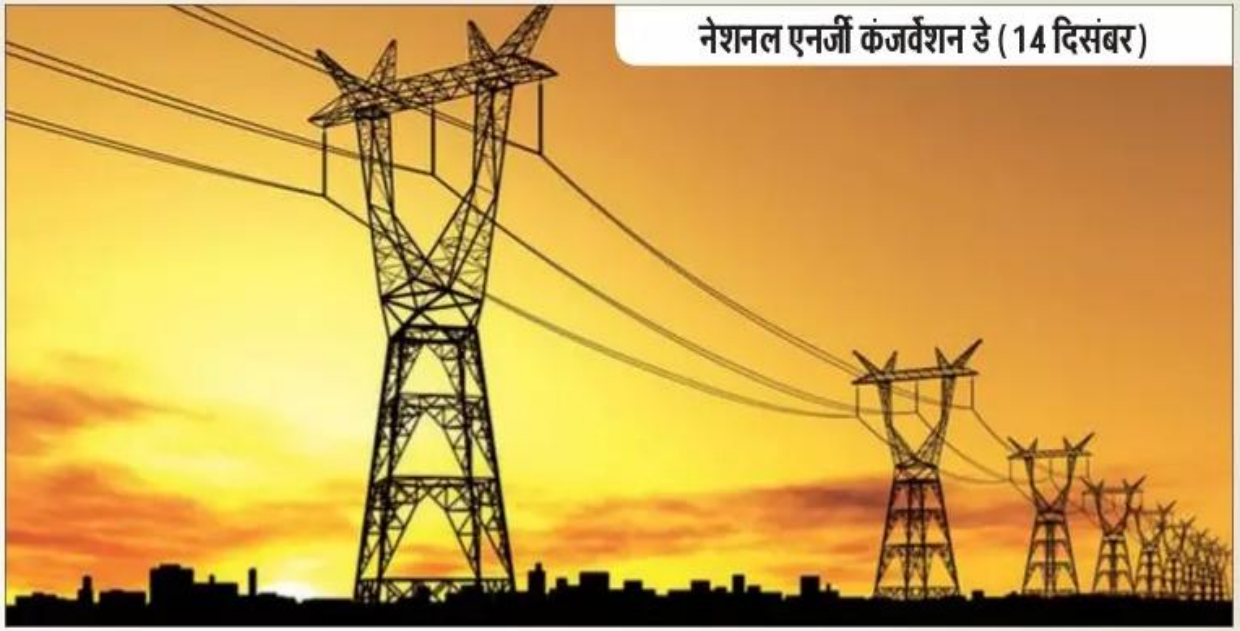

आज के परिवेश में लोगों के मन में यह बात बैठानी जरूरी है कि वे जितना ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा स्रोतों की बचत करेंगे, भविष्य में वह उतना ही उनके काम आएंगे. यह बहुत ही संवेदनशील मसला है. इसके अलावा हमें कुछ ऐसे उपाय भी करने होंगे कि हम बिजली बनाने के साथ-साथ इसका संरक्षण भी भलीभांति कर सकें.

जानकारी प्रदान करना है. आज के परिवेश में लोगों के मन में यह बात बैठानी जरूरी है कि वे जितना ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा स्रोतों की बचत करेंगे, भविष्य में वह उतना ही उनके काम आएंगे. यह बहुत ही संवेदनशील मसला है. आज हम जिस प्रकार के दौर से गुजर रहे हैं और भौतिकतावादी वस्तुओं की तरफ आकर्षित हो रहे हैं, बहुत जल्द ही यह हमारे सामने एक चुनौती के रूप में अग्रसर होने वाला है. आज जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है, जहां हमें विद्युत की आवश्यकता न पड़ती हो. बावजूद इसके हम में से बहुत से ऐसे लोग होंगे, जिन्हें इसके उद्गम के बारे में जानकारी नहीं होगी. आपको शायद यह जानकर आश्चर्य होगा कि आज आजादी के लगभग सात दशकों बाद भी हिंदुस्तान के करोड़ों लोग अंधेरे में जीवनयापन करने को मजबूर हैं. आज भी उनके घरों को एक अदद रोशनी की दरकार है. सरकार का हमेशा से यही प्रयास रहा है कि बिजली का अधिक से अधिक उत्पादन हो सके और देश के हर घर में रोशनी की जगमगाए, मगर जिस प्रकार से जनसंख्या में तीव्र गति से बढ़ोत्तरी के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का भी दोहन हो रहा है, उससे हमारे लिए राह थोड़ी दुष्कर हो जाती है.

भारत में बिजली का उत्पादन ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों से किया जाता है. सितंबर 2017 के दौरान लगभग 77.2 प्रतिशत थर्मल से, 12.8 प्रतिशत हाइड्रो से, परमाणु ऊर्जा से 2.4 प्रतिशत और 7.6 प्रतिशत अन्य स्रोतों से (जिनमें बायो मास, सोलर और विंड प्रमुख हैं) बिजली का उत्पादन हुआ. आज संपूर्ण विश्व में थर्मल पॉवर से निर्मित बिजली, ग्लोबल वॉर्मिंग और वातावरण में उत्सर्जित होने वाली कई हानिकारक गैसों के चलते होने वाले वायु प्रदूषण के कारण, एक गहन चिंता का विषय बनी हुई है. यहां तक कि जीवाश्म ईंधन होने के चलते कोयले के भंडार भी सीमित हैं. हाइड्रो का भी हमने पूरी तरह से लगभग दोहन कर लिया है. जबकि पवन और सौर ऊर्जा की अपनी-अपनी सीमाएं हैं. सौर और पवन की उत्पादन क्षमता, ज्यादा जगह, धूप और हवा के प्रवाह की समुचित उपलब्धता पर निर्भर है. जो हर बार संभव नहीं हो पाता इसीलिए उस पर अति निर्भरता ठीक नहीं है. ऐसे में परमाणु ऊर्जा एक स्वच्छ और हरित ऊर्जा का किफायती विकल्प साबित हो रही है, जो बिना किसी प्रदूषण के बड़े पैमाने पर 24 घंटे बिजली का उत्पादन करने में सक्षम है. इसके लिए बहुत ही कम मात्रा में ईंधन की आवश्यकता होती है, जिससे वेस्ट भी बहुत कम मात्रा में निकलता है. यही कारण है इसे काफी बढ़ावा भी दिया जा रहा है.

अगर हम वेस्ट की बात करें, तो जहां दिल्ली और मुंबई सरीखे महानगरों के लिए कोयले से एक दिन की बिजली के निर्माण में लाखों टन वेस्ट उत्पन्न होता है, वहीं दूसरी ओर परमाणु ऊर्जा से बनने वाली बिजली से नगण्य मात्रा में हाई लेवल रेडियोएक्टिव वेस्ट निकलता है. आज भारतवर्ष में 22 परमाणु बिजली घर सुरक्षित प्रचालन के गौरव एवं अनुभव के साथ अनवरत कार्यशील हैं. इनसे लगभग 6780 मेगावॉट बिजली का उत्पादन हो रहा है. इन सबके अलावा आज हमें कुछ और उपायों पर भी ध्यान देने की जरूरत है ताकि हम बिजली बनाने के साथ-साथ इसका संरक्षण भी भलीभांति कर सकें. उदाहरण के तौर पर हमें आज ज्यादा से ज्यादा एलईडी बल्बों को उपयोग में लाना चाहिए ताकि एक तरफ हमें कम वॉट पर अच्छी रोशनी मिल सके, बिजली की भी खपत कम हो सके और दूसरी तरफ बिजली के बिल को काफी हद तक कम किया जा सके. एलईडी बल्बों के इस्तेमाल में किफायत को देखते हुए हमें इसका उपयोग घरों के अलावा स्ट्रीट लाइट्स में भी सुनिश्चित करना चाहिए ताकि बड़े स्तर पर बिजली को बचाया जा सके.

आज के बच्चे ही कल का भविष्य हैं. आज इस बात की आवश्यकता है कि हम इन नौनिहालों को अभी से ही ऊर्जा संरक्षण का पाठ पढ़ाएं. मसलन जहां जरूरी न हो वहां दिन में बल्ब का इस्तेमाल न करें. जिस जगह आप न बैठे हों वहां व्यर्थ में एसी, पंखा या अन्य उपकरणों को बंद रखें. घरों और कार्यालयों का भी निर्माण आधुनिक पद्धति से इस प्रकार से किया जाए कि वहां प्राकृतिक रूप से ज्यादा से ज्यादा सूर्य की रोशनी और हवा मिल सके. सड़कों के किनारे लगे हुए लैंप पोस्टों को दिन में बंद रखा जाए. स्कूल्स, मॉल्स एवं मल्टीप्लेक्सेस में रूफ टॉप पर सोलर पैनल्स को अनिवार्य किया जाए. अगर संभव हो तो घरों में सौर ऊर्जा पर आधारित गीजर और कुकर का इस्तेमाल किया जाए. इस तरह हम काफी हद तक बिजली बचाकर ऊर्जा का संरक्षण कर सकते हैं.

इस दिशा में ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी द्वारा उठाया गया कदम काफी सराहनीय है, जिसमें घरों में प्रयोग होने वाली बिजली पर आधारित उपकरणों के लिए स्टार रेटिंग प्रदान की गई है, जो यह सुनिश्चित करती है कि जितनी ज्यादा रेटिंग वाला उपकरण आप इस्तमाल करते हैं उतना ही वह बिजली के बिल के लिए किफायती साबित होता है. इस तरह अगर हम इन छोटे-छोटे, मगर प्रभावकारी उपायों पर अपने आपको केंद्रित करेंगे, तो हमें काफी हद तक सफलता मिल सकती है. साथ ही हमें अपनी सोच को भी बदलना होगा. अपने आपको भौतिकता के पाश से निकालकर सरलता से जीवनयापन करने के लिए प्रेरित करना होगा अन्यथा जिस गति से हम ऊर्जा का दोहन कर रहे हैं और अपने संसाधनों को खत्म करते जा रहे हैं, इसमें कोई दो राय नहीं कि इससे आने वाली पीढ़ियों को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है. इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, हमें इस ओर अपने प्रयास शुरू करने होंगे.

इस पृष्ठ पर अपनी राय हमें editor@inext.co.in पर भेजें

It is time for a sustainable energy policy which puts consumers, the environment, human health, and peace first.

-Dennis Kucinich